अध्याय 4

एलीपज का पहला भाषण (भाग 1)

मित्रों ने अपनी चुप्पी तोड़ी और एलीपज ने पहले बात की। उसने सहजता से और थोड़ा हिचकिचाते हुए बात की।[1] वह उन तीनों मित्रों में सबसे बड़ा होगा क्योंकि पुरातन परम्परा के अनुसार सबसे बड़ा व्यक्ति ही सबसे पहले बोलता है। रॉबर्ट एल. आल्डन ने एलीपज के पहले भाषण के आरम्भ में मिलने वाली दो विशेष बातों को लिखा है: ''डांट और शिष्टाचार भरी बातें'' उसका भाषण कुछ-कुछ अपोलोजेटिक [धार्मिक विश्वास का पक्ष रखना] लगता है।''[2]

एलीपज का और उसके सब मित्रों का मुख्य दावा यह था कि सब मनुष्य पापी हैं। परन्तु इस प्रस्तावना से उसने यह निष्कर्ष निकाला कि धर्मी बनने की इच्छा रखने वाले लोग खुशहाल होंगे, जबकि दुष्टों को दण्ड मिलेगा और वे अकाल मृत्यु मरेंगे। इस प्रकार से वह और उसके अन्य मित्र ''पाप की छानबीन करने वाली कमेटी'' बन गए। उन्हें यह पता ही था कि अय्यूब अत्यधिक पीड़ा भोग रहा है इसलिए उसने अवश्य कुछ भयंकर गलती की होगी। यदि वह अपने स्वास्थ्य और समृद्धि को फिर से पाने का इच्छुक था तो उसके लिए अपनी गलती को मान लेना आवश्यक था।

अय्यूब के जीवन के पुराने ढंग को याद दिलाया गया (4:1-6)

[1]तब तेमानी एलीपज ने कहा, [2]''यदि कोई तुझ से कुछ कहने लगे, तो क्या तुझे बुरा लगेगा? परन्तु बोले बिना कौन रह सकता है? [3]सुन, तू ने बहुतों को शिक्षा दी है, और निर्बल लोगों को बलवन्त किया है। [4]गिरते हुओं को तू ने अपनी बातों से सम्भाल लिया, और लड़खड़ाते हुए लोगों को तू ने बलवन्त किया। [5]परन्तु अब विपत्ति तो तुझी पर आ पड़ी, और तू निराश हुआ जाता है; उसने तुझे छुआ और तू घबरा उठा। [6]क्या परमेश्वर का भय ही तेरा आसरा नहीं? और क्या तेरा चालचलन जो खरा है तेरी आशा नहीं?''

आयतें 1, 2. एलीपज ने यह पूछते हुए बात आरम्भ की, **''यदि कोई तुझ से कुछ कहने लगे, तो क्या तुझे बुरा लगेगा? परन्तु बोले बिना कौन रह सकता है?''** मूल में दूसरा प्रश्न यह है: ''बोले [उच्चारण] बिना कौन रह सकता है?'' ''बोले'' (*millin, मिल्लिन*) कवि का पसंदीदा शब्द है। अय्यूब की पुस्तक में यह शब्द चौंतीस बार मिलता है जो इस तथ्य को समर्थन देता है कि पूरी पुस्तक को एक ही लेखक ने लिखा।[3] एलीपज को बोलना पड़ा, फिर भी उसने कोमलता और सहानुभूतिपूर्वक बात की।

आयतें 3, 4. ''सुन, तू ने बहुतों को शिक्षा दी है।'' ''शिक्षा'' (*yasar, यासार*) शब्द पुराने नियम के बुद्धि के साहित्य में इस्तेमाल होने वाला तकनीकी शब्द है।[4] इसका इस्तेमाल

विशेषकर धार्मिक और नैतिक शिक्षा के लिए किया जाता है। इस शब्द का अनुवाद ''अनुशाषित करना'' या ''डांटना'' भी हो सकता है। नीतिवचन की पुस्तक में यह शब्द पांच बार मिलता है (9:7; 19:18; 29:17, 19; 31:1)। इसका संज्ञा रूप *musar* (*मुसार*) जो इस क्रिया रूप से लिया गया है, ''सुधार'' या ''अनुशासन'' को दर्शाता है (नीतिवचन 1:2, 3, 7, 8; 3:11; 4:1; 5:12); इसका अनुवाद ''उपदेशपूर्ण अनुशासन'' हो सकता है। बुद्धिमान ने कहा है, ''जो शिक्षा पाने में प्रीति रखता है वह ज्ञान से प्रीति रखता है, परन्तु जो डांट से बैर रखता, वह पशु सरीखा है'' (नीतिवचन 12:1); और ''हे मेरे पुत्र, यदि तू भटकना चाहता है, तो शिक्षा का सुनना छोड़ दे'' (नीतिवचन 19:27)। पुस्तक में आगे अय्यूब ने देखा कि दूसरों ने शिक्षा की उसकी बातों को बड़े ध्यान से सुना था। (29:7-10, 21-23)।

''और निर्बल लोगों को बलंवत किया है।'' ''निर्बल लोगों'' उन्हें कहा गया है जो निराशा और भय में रहते हैं।[5] **''गिरते हुओं को तू ने अपनी बातों से सम्भाल लिया, और लड़खड़ाते हुए लोगों को तू ने बलवन्त किया।''** एलीपज ने अय्यूब की इस बात के लिए सराहना की कि वैसे ही रोग के समय जिसमें वह इस समय स्वयं था, उसने निर्बलों को शांति दी और उनकी सहायता की थी। स्पष्टतया ''ढीले हाथ'' और ''निर्बल घुटने'' कहावत के रूप में इस्तेमाल की जाने वाली लोकोक्तियां थीं (यशायाह 35:3; यहेजकेल 7:17; 21:7; इब्रानियों 12:12)।

आयत 5. परन्तु अब उस अंतर को दिखाता है जो एलीपज ने अय्यूब के व्यवहार में देखा। वह कह रहा था कि दु:ख झेल रहे लोगों को धीरज रखने की सलाह देना बड़ा आसान है। परन्तु जब परेशानियां अपने ऊपर आती हैं तब उन्हें सहना अधिक कठिन होता है। **विपत्ति जो तुझी पर आ पड़ी** का अर्थ है कि अय्यूब उस दु:ख से परेशान या भयभीत था जिसे वह सह रहा था। अय्यूब ने बाद के भाषणों में इस डर को स्वयं माना (21:6; 23:15, 16)।

आयत 6. परमेश्वर का भय ''बुद्धि का मूल है'' (नीतिवचन 1:7) और ''बुद्धि का आरम्भ है'' (नीतिवचन 9:10)। इससे ''आयु बढ़ती है,'' ''दृढ़ भरोसा होता है,'' और ''मनुष्य बुराई करने से बच जाते हैं'' (नीतिवचन 10:27; 14:26; 16:6)। ''इससे, धन, महिमा और जीवन'' का आश्वासन मिलता है (नीतिवचन 22:4)। फ्रांसिस आई. एंडरसन ने कहा है कि यह ''पूरी भक्ति के लिए मानक शब्द'' है।[6]

ऐसे जीवन का अपेक्षित परिणाम **तेर चाल चलन जो खरा है** होता है। पुस्तक में आगे अय्यूब ने दृढ़ता से कहा कि वह भला व्यक्ति है, चाहे उसके मित्रों ने उसकी बातों को सच नहीं माना (27:5; 31:6)। **आसरा** परमेश्वर के प्रति उचित पवित्रता और उसकी शिक्षा से मेल खाते जीवन जीने पर आधारित है। अय्यूब अत्यधिक पीड़ा और उन हानियों के कारण जो उसने उठाई थीं उम्मीद खोने लगा (7:6) था। परन्तु उसने पूरी तरह से हिम्मत नहीं हारी क्योंकि उसने कहा ''वह मुझे घात करेगा ... तो भी मैं अपनी चाल चलन का पक्ष लूंगा'' (13:15)।

''क्या कोई निर्दोष भी कभी नष्ट हुआ है?'' (4:7-11)

[7]''क्या तुझे मालूम है कि कोई निर्दोष भी कभी नष्ट हुआ है? या कहीं सज्जन भी

काट डाले गए? [8]मेरे देखने में तो जो पाप को जोतते और दुःख बोते हैं, वही उसको काटते हैं। [9]वे परमेश्वर की श्वास से नष्ट होते, और उसके क्रोध के झोंके से भस्म होते हैं। [10]सिंह का गरजना और हिंसक सिंह का दहाड़ना बन्द हो जाता है, और जवान सिंहों के दाँत तोड़े जाते हैं। [11]शिकार न पाकर बलवान सिंह भी मर जाता है, और सिंहनी के बच्चे तितर बितर हो जाते हैं।''

ये उन कई बार में से पहली बार है कि पुस्तक में मित्रों के धर्मशास्त्रीय दावे मिलते हैं। साफ-साफ कहें तो वे यह मानने के लिए प्रतिबद्ध थे कि अच्छी बातें उन्हीं के साथ होती हैं जो धर्मी हैं और बुरी बातें उन्हीं के साथ होती हैं जो दुष्ट हैं। उन्होंने इस नियम को सामान्य नियम के रूप में माना। फलस्वरूप एक सामान्य सच्चाई झूठ में बदल गई जब किसी अपवाद को नहीं आने दिया गया। (20:4, 5 पर टिप्पणियां देखें।)

आयत 7. ''क्या तुझे मालूम है कि कोई निर्दोष भी कभी नष्ट हुआ है? या कहीं सज्जन भी काट डाले गए?'' दोनों प्रश्नों के अपेक्षित उत्तर ''कोई नहीं'' और ''कहीं नहीं'' हैं। होमेर हेली ने लिखा है, ''प्रश्नों के नीचे एक गूढ़ इशारा है कि तू नष्ट हो रहा है; तू काटा जा रहा है; इसलिए तू न तो निर्दोष है और न ही खरा।''[17] सच्चाई यह है कि निर्दोष और धर्मी दोनों नष्ट हुए हैं! हाबिल (उत्पत्ति 4:8) से लेकर वेदी के नीचे के पवित्र लोगों के प्राण (प्रकाशितवाक्य 6:9), धर्मियों के नाश होने का नमूना देते हैं। आल्डन ने कहा है, ''न तो [अय्यूब] और न उसके मित्रों में धर्मी दुःख उठाने वाले की श्रेणी थी।''[18]

आयत 8. ''मेरे देखने में तो जो पाप को जोतते और दुःख बोते हैं, वही उसको काटते हैं।'' अय्यूब के मित्रों का ईश्वरीय न्याय का दृष्टिकोण इस आयत से बेहतर और कहीं नहीं मिलता। वास्तव में नीतिवचन हमें बताता है, ''जो कुटिलता का बीज बोता है, वह अनर्थ ही काटेगा, और उसके रोष का सोंटा टूटेगा'' (नीतिवचन 22:8)। प्रेरित पौलुस ने घोषणा की, ''धोखा न खाओ; परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा'' (गलातियों 6:7)। दोष इसी तथ्य में है कि *हर कोई* जो दुःख *भोगता है* मित्रों के द्वारा उस पर दुःख *बोने वाला* होने का दोष लगाया गया।

आयत 9. परमेश्वर की श्वास उस बड़ी वायु का संकेत हो सकता है जिससे सबसे बड़े भाई का घर नष्ट हो गया, जब वह अपने भाई-बहनों के साथ दावत कर रहा था (1:18, 19)।

आयतें 10, 11. इन आयतों में **सिंह** के लिए पांच अलग-अलग उपशब्द हैं। जॉन ई. हार्टले ने टिप्पणी की है, ''ये शब्द सम्भवतया अलग-अलग नसलों से लेकर उनके विकसित होने के चरणों की बात कर रहे हैं, चाहे शब्दों के भेद अनिश्चित हैं और क्योंकि उन्हें संक्षेप में अनुवाद करना कठिन है।''[19] यहां पर कहने का तात्पर्य यह है कि ''जंगल का राजा'' भी परमेश्वर के कोप से बच नहीं सकता।

एलीपज के ज्ञान का स्त्रोत (4:12-21)

[12]''एक बात चुपके से मेरे पास पहुँचाई गई, और उसकी कुछ भनक मेरे कान में पड़ी। [13]रात के स्वप्नों की चिन्ताओं के बीच जब मनुष्य गहरी निद्रा में रहते हैं, [14]मुझे ऐसी

**थरथराहट और कँपकँपी लगी कि मेरी सब हड्डियाँ तक हिल उठीं। [15]तब एक आत्मा मेरे सामने से होकर चली; और मेरी देह के रोएँ खड़े हो गए। [16]वह चुपचाप ठहर गई और मैं उसकी आकृति को पहिचान न सका। परन्तु मेरी आँखों के सामने कोई रूप था; पहिले सन्नाटा छाया रहा, फिर मुझे एक शब्द सुनाई पड़ा: [17]'क्या नाशमान मनुष्य परमेश्वर से अधिक धर्मी हो सकता है? क्या मनुष्य अपने सृजनहार से अधिक पवित्र हो सकता है? [18]देख, वह अपने सेवकों पर भरोसा नहीं रखता, और अपने स्वर्गदूतों को भी दोषी ठहराता है; [19]फिर जो मिट्टी के घरों में रहते हैं; और जिनकी नींव मिट्टी में डाली गई है, और जो पतंगे के समान पिस जाते हैं, उनकी क्या गणना। [20]वे भोर से साँझ तक नष्ट किए जाते हैं, वे सदा के लिये मिट जाते हैं, और कोई उनका विचार भी नहीं करता। [21]यदि उनके डेरे की डोरी उनके अन्दर ही अन्दर कट जाती, तो क्या वे बिना बुद्धि के ही मर न जाते?'''

एलीपज ने ''रात के स्वप्न'' का एक अनुभव याद किया जिसने उसे पूरी तरह से प्रभावित किया था। उसने इसे ईश्वरीय प्रकाशन बताया। आल्डन ने लिखा है:

> विशेष प्रकाशन होने का दावा करने वाले लोगों के साथ बहस करना कठिन होता है। ऐसे लोगों को उनके विश्वास से आसानी से हिलाया नहीं जा सकता, चाहे यह बिल्कुल स्पष्ट है कि चाहे दर्शन और स्वप्न आम तौर पर उसी बात की पुष्टि कर रहे होते हैं जो उनका विश्वास होता है या जो वे विश्वास करना चाहते हैं।[10]

आयतें 12–16. एलीपज ने **रात के स्वप्नों** को विस्तार से बताया जो उसने **निद्रा में** देखे थे। **चुपके से** और **कान में पड़े** शब्द संदेश के गुप्त होने पर ज़ोर देते हैं और इस बात पर भी कि उस संदेश को प्राप्त करने वाला केवल एलीपज ही था। इन दर्शनों से उसके अंदर खलबली मच गई कि उसकी **देह के रोएं खड़े हो गए**। **आत्मा** (*ruach, रूआच*) शब्द का अनुवाद ''श्वास'' या ''वायु'' भी हो सकता है।[11] सेमुएल टेरियन ने जोर देकर कहा है कि इसका अनुवाद ''वायु'' होना चाहिए।[12] परन्तु यह स्पष्ट है कि एलीपज ने इसे अलौकिक उपस्थिति बताया। बेशक वह **आकृति को पहिचान न सका**, पर उसे **एक शब्द सुनाई पड़ा**। **सन्नाटा** (*d^{e}mamah, डेमामाह*) शब्द 1 राजाओं 19:12 वाले प्रसिद्ध ''एक दबा हुआ धीमा शब्द'' सहित पवित्र शास्त्र में केवल दो और बार इस्तेमाल हुआ है (ASV)।[13]

आयत 17. आल्डन ने कहा है, ''यहां और अगली दो आयतें [पुराना नियम] अभिव्यक्तियां हैं कि परमेश्वर की आज्ञाओं का 'सबने पाप किया है' और परमेश्वर की आज्ञाओं से 'रह गए' (भजन संहिता 14:3; 53:3[4]; रोमियों 3:10–11, 23)।''[14] **''क्या नाशमान मनुष्य परमेश्वर से अधिक धर्मी हो सकता है?''** को परमेश्वर और मनुष्य के बीच तुलना करने को भी समझा जा सकता है। यह प्रश्न हो सकता है कि ''क्या कोई परमेश्वर से अधिक धर्मी हो सकता है?'' ''मनुष्य'' (*^{e}nosh, इनोश*) मनुष्यजाति की कमज़ोरी को दर्शाता हो सकता है। KJV (हिन्दी साहित्य-अनुवादक) में ''नाशवान मनुष्यत्व'' है। **''क्या मनुष्य अपने सृजनहार से अधिक पवित्र हो सकता है?''** यहां ''मनुष्य'' (*geber, गेबेर*) सामर्थी व्यक्ति को दर्शाता है।[15] सो प्रश्न पूछे जाते हैं: ''क्या परमेश्वर के सामने कोई धर्मी हो सकता है, क्या कोई बड़ी सामर्थ वाला

व्यक्ति नैतिक रूप में इतना साफ़ सुथरा हो सकता है।'' स्पष्ट है कि एलीपज को नहीं लगता था कि ऐसा हो सकता है।

आयत 18. संदर्भ से यह संकेत मिलेगा कि **सेवकों** और **स्वर्गदूतों** स्वर्गीय या अलौकिक जीवों को कहा गया है। बहस यह है कि वे जीव भी जो दिलो-जान से परमेश्वर सेवा करते हैं **दोषी** (*thoh°lah, थोहोलाह*) होने से बच नहीं सकते।

आयतें 19-21. एलीपज ने एक जैसे रूपकों का इस्तेमाल करके मनुष्यजाति के कमज़ोर होने पर ज़ोर दिया: **मिट्टी के घरों ... नींव मिट्टी में ... पतंगे के समान पिस जाते हैं, ... नष्ट किए जाते ... मिट जाते हैं।**''मिट्टी'' के रूपक उपयुक्त हैं क्योंकि ''यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा'' (उत्पत्ति 2:7; देखें भजन संहिता 103:14)। मृत्यु को आम तौर पर मिट्टी में लौट जाने के रूप में दिखाया जाता है (7:21; 10:9; 17:6; 20:11; 34:15; 40:13; भजन संहिता 90:3; 104:29; सभोपदेशक 3:20; 12:6, 7)। यह शरीर के सांसारिक ''तम्बू'' को पीछे छोड़ जाने का भी प्रतीक है (2 कुरिन्थियों 5:1, 4; 2 पतरस 1:13)।

'''**वे बिना बुद्धि के ही मर न जाते।**'''[16] आयत 21 उन बीस आयतों में से पहली है जो पुस्तक में ''बुद्धि'' का उल्लेख करती है। ''बुद्धि'' (*chokmah, चोक्माह*) के लिए इब्रानी शब्द की परिभाषा लुईस गोल्डबर्ग ने इस प्रकार दी है:

> *अक्रम* का प्रमुख विचार सामान्य दिलचस्पी तथा मूल नैतिकता के मामलों सहित जीवन के अनुभवों से सम्बन्धित सोच के ढंग को और व्यवहार को दिखाता है। ये चिंताएं सांसारिक मामलों में विवेक, कला में कौशल, नैतिक संवेदनशीलता और परमेश्वर के ढंगों में अनुभव से जुड़ी हैं।[17]

हमें याकूब की चेतावनी को याद रखना चाहिए:

> पर यदि तुममें से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता हैं; और उसको दी जाएगी। पर विश्वास से मांगे, और कुछ सन्देह न करे; क्योंकि सन्देह करने वाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है (याकूब 1:5, 6)।

प्रासंगिकताएं

जब लोग परेशानी में होते हैं (अध्याय 4)

राजा अग्रिप्पा के सामने पेशी के दौरान खड़े होकर जब पौलुस ने मसीहियत की अपनी बड़ी सफ़ाई दी तो रोमी हाकिम फेस्तुस चिल्ला उठा था, ''हे पौलुस, तू पागल है। बहुत विद्या ने तुझे पागल कर दिया है'' (प्रेरितों 26:24; NIV)। पौलुस पागल नहीं था। बड़े धीरज से पौलुस अपनी ज़मीन पर खड़ा था और उसने हाकिम को बड़े आदर सहित बताया कि वह जो कह रहा है वह बिल्कुल सही है (प्रेरितों 26:25)।

बहुत से लोग अच्छे इरादे से, खासकर परेशान लोगों को अपनी सलाह देते हैं। उनके इरादे अच्छे होते हैं और वे अपने परेशान मित्र को तसल्ली और दिलासा देने की कोशिश कर रहे होते

हैं। सलाह आम तौर पर बाइबल की भाषा में होती है; परन्तु बहुत बार वह सलाह बाइबल के अनुसार सही नहीं होती, क्योंकि वह ''पूरा सच'' नहीं होती और न ही तसल्ली देने वाली होती है। पौलुस की तरह हमें बात करते समय आदरपूर्वक और सही बात ही करनी चाहिए। फेस्तुस को लगा था कि पौलुस को केवल इतना ज्ञान है जिससे वह पागल हो गया है और यह खतरनाक है, जबकि वह न तो पागल था और न ही खतरनाक था। बल्कि ऐसे लोग होते हैं और आम तौर पर तसल्ली देने वाले लोग होते हैं जिनको पवित्र शास्त्र का इतना ही ज्ञान होता है। उनकी नीयत चाहे अच्छी हो, पर उनकी सलाह से परेशान व्यक्ति को कोई सहायता नहीं मिलती। अय्यूब का मित्र एलीपज बिल्कुल ऐसा ही था। अय्यूब की पुकार सुनकर, उसका उत्तर सदाशयी था, पर उससे अय्यूब की सहायता नहीं हुई। एलीपज के पहले भाषण को पूरा पढ़ने पर हमें कई महत्वपूर्ण बातों का पता चलता है कि अपने परेशान मित्रों को जवाब देने में हम क्या ''करें'' और क्या ''न करें।''

जब लोग परेशान होते हैं ...

और टिप्पणियां देने के लिए आगे बढ़ने से पहले, सबसे पहले कोमलता से शुरू करें। एलीपज अय्यूब का बहुत अच्छा मित्र था। जब उसने अय्यूब की परेशानियों के बारे में सुना तो वह मिलने आया। एलीपज पूरा सप्ताह अपने मित्र के साथ चुप चाप बैठा रहा। उसने अय्यूब को पहले बोलने दिया और अय्यूब को अपनी पीड़ा और अपने विचार व्यक्त करने की छूट दी। पूरे सप्ताह भर अपने मित्र के साथ खामोशी के साथ बैठने के बाद, पहली टिप्पणी जो एलीपज ने की वह एक सवाल के रूप में थी। उसने पूछा, ''यदि कोई तुझ से कुछ कहने लगे, तो क्या तुझे बुरा लगेगा?'' (4:2)। यह टिप्पणी बहुत दिलचस्प है। अय्यूब के साथ हम किस गुण को जोड़ते हैं? उत्तर है ''धीरज'' (याकूब 5:11; KJV)। जब लोग परेशान हों और दूसरों से बात करने के इच्छुक हों तो आम तौर पर उन्हें कोमल, शांति देने वाले, धीरज से भरे, करुणामय और तसल्ली देने वाले शब्द अच्छे लगते हैं।

दूसरा, फिर जो बात आप कहना चुनते हैं उसे समझदारी से चुनें। सभोपदेशक 3:1, 7 कहता है, ''हर एक बात का एक अवसर और प्रत्येक काम का, ... एक समय है। फाड़ने का समय, और सीने का भी समय; चुप रहने का समय, और बोलने का भी समय है।'' एलीपज चुप था और अंत में जब वह बोला तो उसने अपने मित्र अय्यूब की सराहना की (4:3, 4)। सराहना करना अच्छी बात है, पर नीतिवचन 12:25 कहता है कि ''भली बात से वह आनन्दित होता है'' (NIV)। नीतिवचन 16:24 कहता है, ''मनभावने वचन मधुभरे छत्ते की नाईं प्राणों को मीठे लगते, और हड्डियों को हरी-भरी करते हैं।'' एलीपज ने बताया कि अय्यूब ने दूसरों को तसल्ली दी थी। जब वे परेशान होते थे और उन्हें सामर्थ चाहिए होती थी। ऐसा लगता है कि एलीपज अय्यूब का ऐसा ही मित्र बनना चाहता था। जब हम परेशान लोगों से बात कर रहे होते हैं तो हमें कुलुस्सियों 4:6 के इन शब्दों पर ध्यान देना अच्छा रहेगा, ''तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित और सलोना हो, कि तुम्हें हर मनुष्य को उचित रीति से उत्तर देना आ जाए'' (NIV)।

तीसरा, किसी गलत आधार पर कोई टिप्पणियां न करें (और फिर उसे पवित्र शास्त्र के साथ मिलाने की कोशिश करें)। इस बिन्दु तक एलीपज अय्यूब को अच्छी शांति देने वाला था। परन्तु आयत 5 में एलीपज अय्यूब की भावनाओं को दबाने लगा और यह अच्छी बात नहीं।

फिर एलीपज बातें करने लगा, तर्क करने लगा और उपदेश देने लगा; और जल्द ही वह कमियां निकालने लगा। फिर से ''हर बात का समय'' है पर जब लोग परेशान हों तब उन्हें उपदेश देना कोई अच्छी बात नहीं होती।

आयत 7 में एलीपज में यह प्रश्न पूछा, ''क्या तुझे मालूम है कि कभी कोई निर्दोष भी नष्ट हुआ है?'' कई ऐसे निर्दोष लोग हैं जो बिना किसी कारण के दु:खी हुए हैं। हाबिल नष्ट हुआ, उसे उसके अपने ही भाई कैन ने मार डाला और उसने अपनी पीड़ा और मृत्यु को लाने के लिए कुछ नहीं किया। बेशक बाइबल एलीपज के जीवन काल के बाद कई निर्दोष लोगों के बारे में बताती है जिन्होंने दु:ख सहा और मारे गए, जिसमें स्तिफनुस, हेरोदेस के आदेश से मारे जाने वाले बच्चे, और यीशु मसीह शामिल हैं। निर्दोष लोग आम तौर पर चाहे दु:खी होते हैं पर इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्होंने दु:खी होने के योग्य कोई काम किया है।

आयत 8 एलीपज के संदेश को समझने की कुंजी है। उसने कहा, ''जो दु:ख बोते हैं वही उसको काटते हैं।'' बाइबल में दो बार यह कहा गया है, जो तुम बोते हो वही काटोगे (देखें नीतिवचन 22:8; गलातियों 6:7)। यह नियम सच है। परन्तु एलीपज गलत था, जब उसने यह गप्प मारी कि जिस पर भी दु:ख आता है उसने दु:ख बोया ही होगा। ऐसा हर मामले में नहीं होता। जब लोग परेशान होते हैं तो हमें गलत आधार पर टिप्पणियां नहीं करनी चाहिए।

चौथा, ''थपकी'' देने वाली बातें न करें या उत्तर न दें, विशेषकर जब हमें सचमुच में उत्तर का पता न हो। एलीपज ने मूलतया अय्यूब से कहा, ''परमेश्वर ने यह सब तेरे साथ होने दिया है।'' किसी परेशान व्यक्ति को ऐसी बातों से तसल्ली नहीं मिलती। नेकनीयत मित्र कई बार ऐसी टिप्पणियां कर देते हैं, जैसे: ''परमेश्वर हमसे बेहतर जानता है''; ''परमेश्वर तुम्हें उतना ही देगा जितना तुम सम्भाल सकते हो''; ''स्वर्ग में परमेश्वर को उसकी जरूरत होगी''; ''या खैर मनाओ कि परमेश्वर तुम्हारे साथ था।''

पांचवां, यह मत कहो, ''मैं जानता हूं कि तुम्हें कैसा लग रहा है।'' दु:ख सहने वाले लोगों पर तरस खाना बड़ा कठिन होता है यदि हमने वह न भोगा हो जो उसके साथ हो रहा है। यह कहकर कि ''मैं जानता हूं कि तुम्हें कैसा लग रहा है,'' हमने असल में परेशान व्यक्ति की पीड़ा को कम नहीं किया है। दु:खी लोगों की बात को सुनना और उन्हें यह जताना कि आप उनकी कितनी परवाह करते हो, अधिक सहायक हो सकता है। एफ़. मिलस

टिप्पणियां

[1]*परिचय* पृष्ठ 11–12 में दिया गया एलीपज का वर्णन देखें। [2]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमेंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 83. [3]वहीं, 83. [4]फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमेंट्री,* टिन्डेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमेंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1974), 111. [5]लुडविग कोहलर एड वाल्टर बामगार्टनर, *द हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. ऐंड सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 2:1277. [6]एंडरसन, 112. [7]होमेर हेली, *ए कॉमेंट्री ऑन जॉब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 58. [8]आल्डन, 855. [9]जॉन ई. हार्टले, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमेंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 108, एन. 4. [10]आल्डन, 86.

[11]कोहलर ऐंड बामगार्टनर, 2:1197–98. [12]*द इंटरप्रेटर'स बाइबल,* सम्पा. जॉर्ज आर्थर बट्रिक (नैशविल:

अबिंग्डन प्रैस, 1954), 3:939 में सेमुएल टेरियन, ''द बुक ऑफ़ अय्यूब: इंट्रोडक्शन ऐंड एक्सेजेसिस।'' [13]और जगह भजन संहिता 107:29 है। [14]आल्डन, 88. [15]ऐल्बर्ट बार्नस, *अय्यूब,* नोट्स ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट, सम्पा. रॉबर्ट फ्रू (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1949), 1:151. [16]बिल बरचट ने ''बुद्धि'' की परिभाषा इस प्रकार लिखी है, ''बुद्धि की परिभाषा हर प्रकार की व्यावहारिक कुशलताओं और संस्कृति की तकनीकी कलाओं सहित, जीवन की समस्याओं के साथ वास्तविक ढंग से निपटने के रूप में की जा सकती है। यह चीज़ों का उन्हें अत्यधिक उपयोगी ढंग से मिलाने की सामर्थ के साथ-साथ उनके उपयुक्त स्वभाव और सम्बन्धों का व्यापक ज्ञान है। एक नैतिक अर्थ में यह विवेक की तरह ही है। परन्तु एक अंतर यह हो सकता है कि बुद्धि सकारात्मक है जबकि विवेक में नकारात्मक संकेत होते हैं। बुद्धि हम से वह कहलवाती या करवाती है जो सही है, जबकि विवेक हमें वह कहने या करने से रोकता है जो सही नहीं है।'' [17]*थियोलॉजिकल वर्डबुक ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* सम्पा. आर. लेयर्ड हैरिस, ग्लीसन एल. आर्चर, जूनियर, और ब्रूस के. वाल्टके (शिकागो: मूडी प्रैस, 1980), 1:282-83 में लुइस गोल्डबर्ग, *''hakam.''*